

210

न्यायालय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर

प्रकरण नंमांक / 2012 पुनरावलोकन - रिकॉर्ड ५०८१-II/१२

मानव के वापरों पर
हाय कानून ३/१२/१२
नाम नाम संग्रहीत
प्राप्ति
नाम नाम संग्रहीत
प्राप्ति

रामकृष्ण दत्तक पुत्र स्व० गगवानदास
निवासी डाक बंगला के पारा, पिछोर
तहसील पिछोर जिला शिवपुरी म०प्र०
— आवेदक

विरुद्ध

1. हेभलता पत्नी बृजेश कुमार द्वारा मुख्यार
आम पिता हरीशक युत्र बैजनाथ निवासी
संकट मोचक कॉलोनी, पिछोर तहसील
पिछोर जिला शिवपुरी म०प्र०
2. म०प्र० शासन — उनावेदकगण

श्री एम. के.सिंह रादस्य राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर द्वारा प्र०क००५०१८ २२१६
-तीन/२०११ में पारित आदेश दिनांक २५-०९-२०१२ के विरुद्ध पुनरावलोकन
आवेदन अन्तर्गत धारा-५१ म०प्र०य०-राजस्व संहिता १९५९.

महोदय,

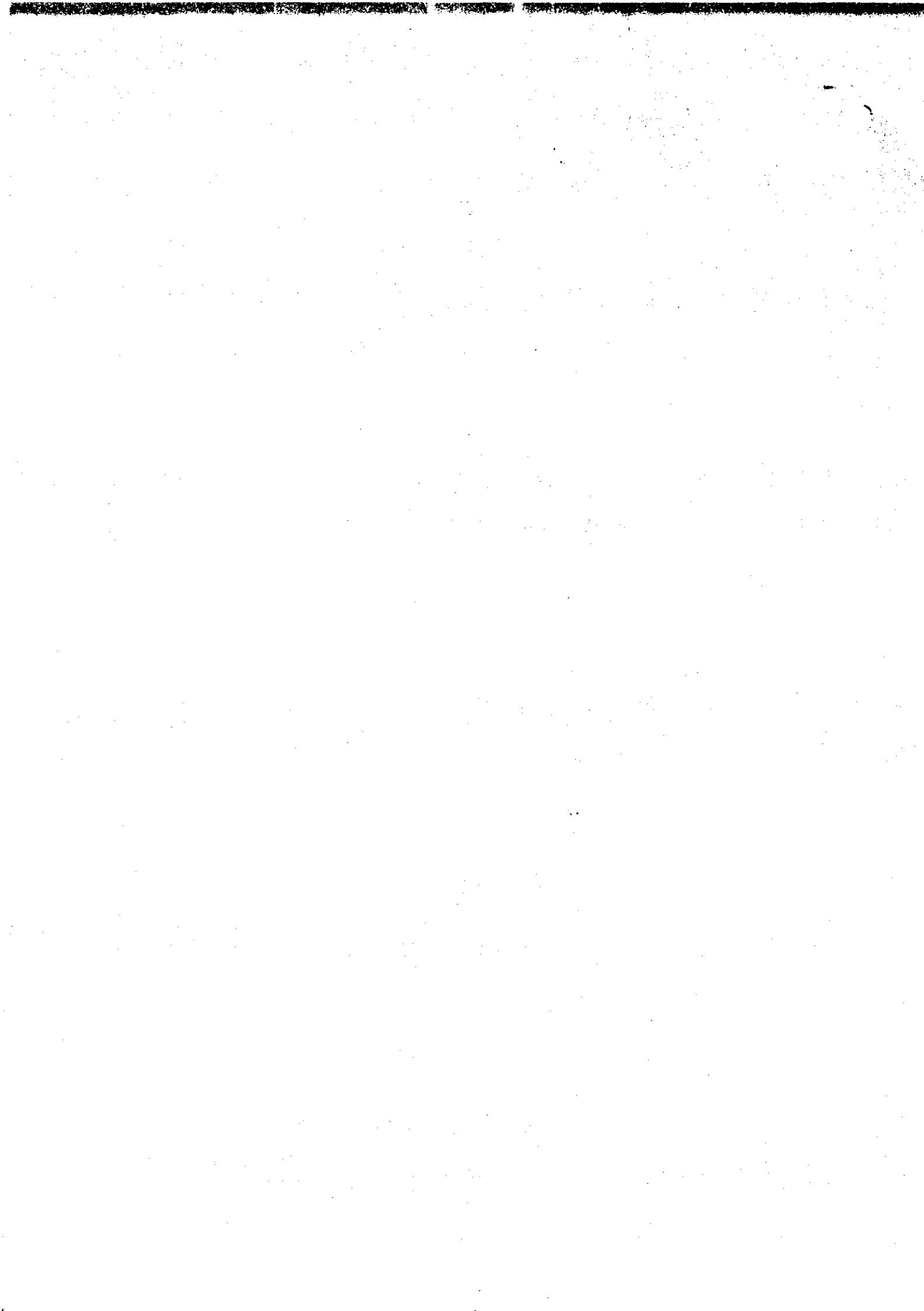
आवेदक निम्नलिखित तथ्यों एवं आधार पर पुनरावलोकन हेतु आवेदन प्रस्तुत करता

1. यह कि, इस आनंदीय न्यायालय द्वारा पारित विवादित आदेश में ऐसी चुटियां भी हैं जो प्रकरण के सम्पूर्ण अभिलेख को देखने वाले स्पष्ट होती हैं, उनके लिये अभिलेख के तात्पर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है तथा ये आदेश के पुनरावलोकन के लिये गर्वाप्त आधार निर्मित करती हैं।

2. यह कि, विवादित आदेश की प्रथम त्रुटि यह है कि उसमें आवेदक द्वारा प्रस्तुत तर्कों का वर्णन अवश्य किया गया है परन्तु सब पर कोई निर्णय नहीं किया गया है प्रकरण के महत्वानुसार विवरणों का निराकरण नहीं किया दाना पुनरावलोकन का लक्षित आधार है।

3. यह कि, आवेदक की ओर से यह तर्क प्रस्तुत किया गया था कि तहसील न्यायालय ने नामांतरण आवेदन पर मूल आदेश परियोजित किया था, तहसील के आदेश जमीन पाप्य आदेश या परन्तु कलेक्टर ने जन सुनवाई में दिये गये अवश्यक दस्तावेज पर तहसीलदार के ऐसे आदेश को अपारत कर दिया थिये के प्रावधान अर्थात् राहिता के अंतर्गत प्रावित न्यायलयीन आदेश को अनुसन्धान में अपारत करने का कलेक्टर का आदेश शून्य था इस किन्तु पर विवादित आदेश कोई निर्णय नहीं दिया गया।

RAS

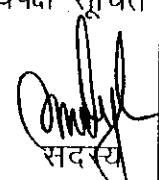


XXXIX(a)BR(H)-11

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

प्रकरण क्रमांक – रिव्यू 4089-एक / 16

जिला – शिवपुरी

स्थान तथा दिनांक	वार्यवाही तथा आवेदन	पक्षकारी एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
१२-११-१६	<p>प्रकरण का अवलोकन किया। यह पुनरावलोकन इस न्यायालय द्वारा प्रकरण क्रमांक अपील 2216-तीन/12 में पारित आदेश दिनांक 25-9-12 के विरुद्ध म0प्र0 भू-राजस्व संहिता, 1959 (जिसे आगे संहिता कहा जायेगा) की धारा 51 के तहत प्रस्तुत किया गया है।</p> <p>2— आवेदक के विद्वान अधिवक्ता द्वारा ग्राहयता के बिंदु पर प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया तथा आलोच्य आदेश का अध्ययन किया गया। निम्नलिखित तीन आधार विद्यमान होने पर ही पुनरावलोकन आवेदन स्वीकार किया जा सकता है :-</p> <p>1— नई एवं महत्वपूर्ण बात/साक्ष्य का पता चलना जो उस समय जब आदेश पारित किया गया था, सम्यक तत्परता के पश्चात भी नहीं मिल पाई थी।</p> <p>2— अभिलेख से प्रकट कोई भूल/गलती।</p> <p>3— कोई अन्य पर्याप्त कारण।</p> <p>आवेदक ने पुनरावलोकन का जो आवेदन पेश किया है उसके परीक्षण से उक्तांकित आधारों में से कोई आधार विद्यमान होना नहीं पाया जाता इसलिए इस पुनरावलोकन आवेदन में कोई बल नहीं होने से यह पुनरावलोकन प्रकरण निरस्त किया जाता है। उभयपक्ष सूचित हों। अभिलेख वापिस हो।</p> <p style="text-align: right;"> सदस्य</p> <p><i>PASL</i></p>	